M.A. (Part-II) (Pali & Prakrit) (CBCS Pattern) Semester - IV

# MAPPCBCS401 - Paper-I - Anguttar Nikay Va Pali Kavya

P. Pages : 5 **GUG/S/23/10535**

Time : Three Hours * 0 8 8 5 * Max. Marks : 80

---

सुचना :- 1. सर्व प्रश्न सोडविणे आवश्यक आहे.
सभी सवालों के जवाब लिखना अनिवार्य है।
2. स्वीकृत माध्यमातून उत्तरे लिहावीत.
स्वीकृत माध्यम में जवाब लिखिए।

**1.** अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

"कथं च भिक्खवे, हानि होति कुसलेसु धम्मेसु, नो ठिति नो वुड्ढि? इध, भिक्खवे, भिक्खु यत्तको होति, सध्दाय सीलेन सुतेन चागेन पञ्ञाय पटिभानेन, तस्स ते धम्मा नेव तिट्ठन्ति नो वड्ढन्ति। हानिमेतं, भिक्खवे, वदामि कुसलेसु धम्मेसु नो ठितिं नो वुड्ढिं। एवं खो भिक्खवे, हानि होति, कुसलेसु धम्मेसु, नो ठिति नो वुड्ढिं। " कथं च भिक्खवे ठिति होति कुसलेसु धम्मेसु, नो हानि नो वुड्ढिं? इध, भिक्खवे, भिक्खु यत्तको होति सध्दाय सीलेन सुतेन चागेन पञ्ञाय पटिभानेन, तस्स ते धम्मा नेव हायन्ति नो वड्ढन्ति। ठितिमेतं, भिक्खवे, वदामि कुसलेसु धम्मेसु, नो हानिं नो वुड्ढिं। एवं खो, भिक्खवे, ठिति होति कुसलेसु धम्मेसु, नो वुड्ढि नो हानि।

**किंवा / अथवा**

"जनपदपदेसं पाहं, भिक्खवे, दुविधेन वदामि- सेवितब्बं पि असेवितब्बं पी ति, इति खो पनेतं वुत्तं। किञ्चेतं पटिच्च वुत्तं? तत्थ यं जञ्ञा जपपदपदेसं- 'इमं खो मे जनपदपदेसं सेवतो अकुसला धम्मा अभिवड्ढन्ति, कुसला धम्मा परिहायन्ती 'ति, एवरुपो जनपदपदेसो न सेवितब्बो। तत्थ यं जञ्ञा जनपदपदेसं- इमं खो मे जनपदपदेसं सेवतो अकुसला धम्मा परिहायन्ति, कुसला धम्मा अभिवड्ढन्ती' ति, एवरुपो जनपदपदेसो सेवितब्बो। 'जनपदपदेसं पाहं भिक्खवे, दुविधेन वदामि- सेवितब्बं पि असेवितब्बं पी, ति, इति यं तं वुत्तं इदमेतं पटिच्च वुत्तं।

ब) पालि साहित्यात अंगुत्तरनिकायाचे स्थान स्पष्ट करा. **6**
पालि साहित्य में अंगुत्तरनिकाय का स्थान स्पष्ट किजिए।

**किंवा/अथवा**

गिरिमानन्दसुत्ताचा सारांश लिहा.
गिरिमानन्दसुत्तं का सार लिखिए।

**2.** अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. **10**

ससंदर्भ अनुवाद किजिए।

"दुस्सीलस्स, आवुसो, सीलविपन्नस्स हतूपनिसो होति अविप्पटिसारो, अविप्पटिसारे असति अविप्पटिसारविपन्नस्स हतूपनिसं होति पामोज्जं, पामोज्जे असति पामोज्जविपन्नस्स हतूपनिसा होति पीति, पीतिया असति पीतिविपन्नस्स हतूपनिसा होति पस्सध्दि, पस्सध्दिय असति पस्सध्दिविपन्नस्स हतूपनिसं होति सुखं, सुखे असति सुखविपन्नस्स हतूपनिसो होति सम्मासमाधि, सम्मासमाधिम्हि असति सम्मासमाधिविपन्नस्स हतूपनिसं होति यथाभूतञाणदस्सनं, यथाभूतञाणदस्सने असति यथाभुतञाणदस्सनविपन्नस्स हतूपनिसा होति निब्बिदा, निब्बिदाय असति निब्बिदाविपन्नस्स हतूपनिसो होति विरागो विरागे असति विरागविपन्नस्स हतूपनिसं होति विभुत्तिञाणदस्सनं।

**किंवा / अथवा**

"सिया नु खो, भन्ते, भिक्खुनो तथारुपो समाधिपटिलाभो यथा नेव पथवियं पथविसञ्ञी अस्स, न आपस्मिं आपोसञ्ञी अस्स, न तेजस्मिं तेजोसञ्ञी अस्स, न वायस्मिं वायोसञ्ञी अस्स न आकासानञ्चायतने आकासानञ्चायतनसग्गी अस्स, न विञ्ञाणञ्चायतने विञ्ञाणञ्चायतनसग्गी अस्स न आकिञ्चञ्ञायतने आकिञ्चञ्ञायतमनसग्गी अस्स न नेवसञ्ञानासञ्ञायतने नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञी अस्स, न इधलोके इधलोकसञ्ञी अस्स न परलोके परलोकसग्गी अस्स यं पिदं दिट्ढं सुतं मुतं विञ्ञातं पत्तं परियेसित्तं अनुविचरितं मनसा, तञा पि न सग्गी अस्स: सग्गी च पन अस्सा ति?

ब) अंगुत्तरनिकायाची वैशिष्ट्ये स्पष्ट करा. **6**

अंगुत्तरनिकाय की विशेषत:ए स्पष्ट किजिए।

**किंवा / अथवा**

मोरनिवापसुत्तांचा सारांश लिहा.

मोरनिवापसुत्तं का सार लिखिए।

**3.** अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. **10**

ससंदर्भ अनुवाद किजिए।

"तिस्सो इमा भिक्खवे, वेदना। कतमा दिस्सो? सुखा वेदना, दुक्खा वेदना, अदुक्खमसुखा वेदना। सुखा भिक्खवे, वेदना दुक्खतो दट्ठब्बा: दुक्खा वेदना सल्लतो दट्ठब्बा: अदुक्खमसुखा वेदना अनिच्चतो दट्ठब्बा। यतो खो भिक्खवे, भिक्खुनो सुखा वेदना दुक्खतो दिट्ठा होति, दुक्खा वेदना सल्लतो दिट्ठा होति, अदुक्खमसुखा वेदना अनिच्चतो दिट्ठा होति, अयं पुच्चति, भिक्खवे, भिक्खु अरियो सम्मद्दसो अच्छेच्छि तण्हं, विवत्तयि संयोजनं, सम्मा मानाभिसमया अन्तमकासि दुक्खस्सा" ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थैतं इति वुच्चति-

"यो सुखं दुक्खतो अद्द, दुक्खमद्दक्खि सल्लतो
अदुक्खमसुखं सन्तं, अदक्खि नं अनिच्चतो॥
'स वे सम्मद्दसो भिक्खु, यतो तत्थ विमुच्चति।
अभिग्गावोसितो सन्तो, स वे योगातिगो मुनी" ति॥

**किंवा / अथवा**

वुत्तञ्हेतं भगवता वुत्तमरहताति मे सुत्तं-
"तिस्सो इमा, भिक्खवे, धातुयो। कतमा तिस्सो?
रुपधातु अफपधातु निरोधधातु-इमा खो, भिक्खवे,
तिस्सो धातुयो" ति। एतमत्थं भगवा अवोच इत्थेतं
इति वुच्चति-

"रुपधातुं परिञ्ञाय, अफपेसु असण्ठिता
निरोधे ये विमुच्चन्ति, ते जना मच्चुहायिनो॥
कायेन अमतं धातु, फुसयित्वा निरुपधिं।
उपाधिप्पटिनिस्सग्गं, सच्छिकत्वा अनासवो।
देसेति सम्मासम्बुध्दो, असोकं विरजं पद' न्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥

ब) तण्हासुत्तांचा सारांश लिहा? **6**
तण्हासुत्तं का सार लिखिए?

**किंवा / अथवा**

इतिवुत्तकातील तिकनीपातामधील प्रथम वग्गाचे महत्व स्पष्ट करा.
इतिवुत्तक के तिननिपात का प्रथम वग्ग का महत्व स्पष्ट किजिए।

**4.** अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. **10**
ससंदर्भ अनुवाद किजिए।

पब्बज्जं कित्तयिस्सामि यथा पब्बजि चक्खुमा।
यथा वीमंसमानो सो पब्बज्जं समरोचयि॥
संबोधोया घरावासो रजस्सायतनं इति।
अब्भोकासो च पब्बज्जा इति दिस्वान पब्बजि॥
पब्बजित्वान कायेन पापकम्मं विवज्जयि।
वचीदुच्चरितं हित्वा आजीवं परिसोधयि॥
अगमा राजगहं बुध्दो मगधानं गिरिब्बजं।
पिण्डाय अभिहारेसि आकिण्णवरलक्खणो॥

**किंवा / अथवा**

एवमेतं यथाभूतं कम्मं पस्सन्ति पण्डिता
पटिच्चसमुप्पाददस्सा कम्मविपाककोविदा॥
कम्मना वत्तती लोके कम्मना वत्तती पजा
कम्मनिबंधना सत्ता रथस्साणीव यायतो॥
तपेन ब्रम्हचरियेन संयमेन दमेन च
एतेन ब्राम्हणो होति एतं ब्राम्हणमुत्तमं॥
तीहि विज्ज हि संपन्नो सन्तो खीणपुनब्भवो
एवं वासेट्ठ जानाहि ब्रम्हा सक्को विजानतं ति॥

ब) तिपिटक साहित्यामध्ये सुत्तनिपाताचे महत्व स्पष्ट करा. **6**
तिपिटक साहित्य में सुत्तनिपात का महत्व स्पष्ट किजिए।

**किंवा / अथवा**

सल्लसुत्ताचा सारांश लिहा?
सल्लसुत्त का सार लिखिए?

**5.** अ) टिपणे लिहा **कोणतेही दोन** **6**
टिप्पणियाँ लिखिए **कोई भी दो**।

1) मुलकसुतं 2) व्यसनसुत्तं

3) इतिवुत्तक 4) सुत्तनिपात

ब) योग्य पर्याय निवडा. **10**
सही पर्याय चुनिए।

1) अंगुत्तरनिकाय हा ग्रंथ किती निपातात विभक्त आहे.
अंगुत्तरनिकाय यह ग्रंथ कितने निपातो में विभक्त है।

अ) अकरा ब) दहा
क) बारा ड) पंधरा

2) अंगुत्तरनिकाय सुत्तपिटकाचा कितवा ग्रंथ आहे?
अंगुत्तरनिकाय सुत्तपिटक का कितने नंबर का ग्रंथ है?
अ) पहिला ब) दुसरा
क) तिसरा ड) चौथा

3) इतिवुत्तक बुध्दवचन नसेल तर इतर काहीही नाही असे कोणत्या विद्वानाचे मत आहे.
इतिवुत्तक बुध्दवचन नही होगा तो और कोई भी बुध्द वचन नही है। ऐसा किस विद्वान का मत है।
अ) ए. जे. एडमंड ब) हयु-एन-त्सँग
क) डॉ. अलेक्झान्डर कॅनिंगहॅम ड) आचार्य रत्नाकर शान्ती

4) इतिवुत्तक हा खुद्दक निकायाचा कितवा ग्रंथ आहे.
इतिवुत्तक यह खुद्दक निकाय का कितने क्रम का ग्रंथ है।
अ) 01 ब) 04
क) 03 ड) 06

5) संख्याबध्द शैली ही कोणत्या ग्रंथाची विशेषता आहे.
संख्याबध्द शैली यह कौनसे ग्रंथ की विशेषता है।

अ) अंगुत्तरनिकाय ब) दिघनिकाय

क) थेरीगाथा ड) सुत्तनिपात

6) सुत्तनिपापात किती वग्ग आहेत.
सुत्तनिपात में कितने वग्ग है।

अ) दहा ब) पाच

क) सात ड) नऊ

7) सुत्तनिपातात किती सुत्त आहेत.
सुत्तनिपात मे कितने सुत्त है।

अ) 16 ब) 70

क) 60 ड) 120

8) पब्बज्जा सुत्तात कोणत्या राजाचा उल्लेख केला आहे.
पब्बज्जा सुत्त मे कोणसे राजा का उल्लेख किया है।

अ) बिबिसार ब) अशोक

क) शुध्दोदन ड) सिध्दार्थ

9) वासेट्ठ आणि भारद्वाज कोण होते.
वासेट्ठ और भारद्वाज कौन थे।

अ) विद्यार्थी ब) शिक्षक

क) शत्रू ड) वैद्य

10) सुत्तनीपात खुद्दक निकायाचा कितवा ग्रंथ आहे?
सुत्तनिपात खुद्दक निकाय का कोनसे नंबर का ग्रंथ है।

अ) पाच ब) सहा

क) सात ड) नऊ

*********